डॉ. विजय मिश्र

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित भौतिक विज्ञानी एवं संस्कृत विद्वान। कवि के तौर पर न्यू इंग्लैंड, दक्षिण एशिया के अनेक देशों में चर्चित एवं सफल यात्राएँ कीं। अनेक गरिमापूर्ण कवि सम्मेलनों में भागीदारी। विगत १८ बरसों से हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सालाना भारतीय कविता पाठ का आयोजन कर रहे हैं।

सम्पर्क : १८०, बेडफोर्ड रोड, लिंकन, एमए ईमेल : misra.bijoy@gmail.com

वाल्मीकि रामायण : आधुनिक विमर्श-३१

राममित्र सुग्रीव-3

हिंदी अनुवाद : मनीष श्रीवास्तव

राम लम्बे चौदह वर्ष के वनवास के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं थे और पत्नी सीता की साथ में चलने की हठ का भार अलग। बाद में सीता ने भी यह माना कि पति के बिना राजमहल में अकेले रहना उन्हें सुरक्षित नहीं लगा था। सीता को साथ वन में सुरक्षित रखना आसान नहीं था। लक्ष्मण बड़े भाई राम को इस कठिनाई में उनका साथ देने के लिए आगे आये थे। दोनों भाइयों की एक छोटी-सी चूक सीता हरण का कारण बनी। वाल्मीकि के पात्र कथा बनाते हैं!

राम को एक पक्षी से पता चलता है कि अपहरणकर्ता उनकी पत्नी सीता को दक्षिण दिशा में वायु मार्ग से लेकर गया है। फिर उन्हें एक विकराल दानव से पता चलता है कि सुग्रीव नामक एक वानर उनकी सहायता कर सकता है। वो अपने भाई के साथ वन-वन भटकते हुए अंततः सुग्रीव से मिलते हैं। मनुष्य और पशु के बीच की मित्रता असामान्य है और यहां पर भी इसका अपवाद नहीं था। मनुष्य को सौदा करना था किंतु पशु को अपना भाग पहले चाहिए था! राम ने झिझकते हुए सुग्रीव के भाई बाली का वध किया और सुग्रीव को उनकी पत्नी और खोया हुआ राजपाट वापस दिलाया। इसी बीच वर्षाऋतु आ जाती है और सुग्रीव अपने स्त्री-ग्रह में शरण ले लेते हैं।

लक्ष्य प्राप्ति का विचार मात्र व्यक्ति को चिंता में डाल सकता है। पत्नी को वापस पा सकने के विचार ने राम को व्याकुल कर रखा था। उन्होंने अपनी भावनाएं भाई लक्ष्मण के सामने रखीं और वर्षाऋतु के समाप्ति की प्रतीक्षा करने लगे। सुग्रीव की पूर्ण अनुपस्थिति और उनके स्त्री मंडल में लिप्त रहने के विचार ने राम को और भी व्याकुल कर दिया। इस व्याकुलता को क्रोध में बदलने में समय न लगा और क्रोधित हो उन्होंने लक्ष्मण से चेतावनी भिजवाई 'जिस कार्य की प्रतिज्ञा ली थी उसे पूरा करें अन्यथा अपने भाई जैसा परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहें।'

पशु और मानव के बीच की मित्रता की प्रत्याशा, मानवों के बीच होने वाली मित्रता की तर्कसंगता से भिन्न होती है। राम का सुग्रीव के प्रति अविश्वास उनके अपनी गुफा में लोप हो जाने के कारण था। पशुओं का अपना सामाजिक जीवन होता है जिसकी तुलना मनुष्यों के व्यावहारिक आचरण के साथ किया जाना उचित नहीं। मानव राजाओं की भांति पशुओं के राजा को दैनिक विवादों को नहीं सुलझाना होता। वनस्थली कंद

मूल से भरी होने के कारण उन्हें जनजातियों सा जीवन व्यतीत करना होता है। पशुराजा का मुख्य कार्य अपनी प्रजा को घुसपैठियों से बचाना होता है।

मित्रता की परिभाषा एक मानव और पशु के लिए भिन्न होती है। मनुष्य लेनदेन में विश्वास रखता है जबकि पशु कृतज्ञता को स्मृति में पिरो कर रखता है। राम की सुग्रीव से मित्रता एक आवश्यकता थी किन्तु वह सुग्रीव की क्षमता से अनभिज्ञ, उनके उद्देश्य को लेकर परस्पर विरोधी विचारों से ग्रसित हो रहे थे। एक पशु की मानव के प्रति निष्ठा का काव्यात्मक ऐश्वर्य वाल्मीकि अपनी कथा से व्यक्त करते हैं। राम इस बात से अनभिज्ञ थे कि सुग्रीव ने पहले ही अपने दूतों द्वारा समस्त विश्व की वानर प्रजाति को किष्किंधा में एकत्र होने का बुलावा भेज दिया था।

मनुष्य पशुओं को दण्डित कर सकता है! मनुष्य के धनुष-बाण पशुओं के बाहुबल से कहीं अधिक प्रभावशाली होते हैं। मनुष्य मनचाहे स्थल से तीर छोड़ सकता है। लक्ष्मण 'आदेश' का पालन करने के लिए आगे बढ़े ही थे कि उन्हें राम ने रोक लिया। राम को बाली ने द्वंद्व के नियमों के बारे में पहले ही झिड़का था। राम संवेदनशील थे। उन्होंने स्वयं पर नियंत्रण तो किया ही साथ ही लक्ष्मण को भी भाषा की मर्यादा रखते हुए सुग्रीव के साथ बातचीत करने का निर्देश दिया।

लक्ष्मण राम से भिन्न थे। एक बार क्रोध आने पर उन्हें आसानी से शांत नहीं किया जा सकता था। वे तेज गति से

> मित्रता की परिभाषा एक मानव और पशु के लिए भिन्न होती है। मनुष्य लेनदेन में विश्वास रखता है जबकि पशु कृतज्ञता को स्मृति में पिरो कर रखता है। राम की सुग्रीव से मित्रता एक आवश्यकता थी किन्तु वह सुग्रीव की क्षमता से अनभिज्ञ, उनके उद्देश्य को लेकर परस्पर विरोधी विचारों से ग्रसित हो रहे थे।

किष्किंधा की गुफाओं की ओर बढ़ने लगे जिससे वहां एकत्र हुए वानर भयभीत हो उठे। अपितु सुग्रीव के पास संदेश पहुंचाया जा चुका था, किन्तु वे अपनी गुफा में मादकता में लीन गहरी निद्रा में थे। वर्षों वंचित रहने के कारण वो अपनी क्षुधा शांत करने में व्यस्त थे। पशु अपना जीवन आराम से व्यतीत करते हैं। विश्व की अन्य वस्तुएं प्रतीक्षा कर सकती हैं किन्तु एक पशु की इच्छाएं नहीं! लक्ष्मण को गुफा के अंदर की स्थिति का पता नहीं था। उन्होंने अंगद के माध्यम से संदेश भेजा। अंगद ने सुग्रीव को सूचित किया कि क्रोधित लक्ष्मण बाहर प्रतीक्षा कर रहे हैं!

सुग्रीव के मन में ये विचार उठा 'मैंने तो कुछ भी गलत नहीं किया! फिर लक्ष्मण क्यों क्रोधित हैं?' फिर सोचा : 'मित्रता करना तो सरल है परन्तु उसे बनाये रखना कठिन! मुझे भय है कि श्री राम का ऋण उतारना उतना सरल नहीं होगा!' हनुमान, जो कि एक अत्यंत बुद्धिमान सलाहकार थे, हस्तक्षेप करते हुए बोले 'लंका पर चढ़ाई का समय आ चुका है। लक्ष्मण इस बात से क्रोधित हैं कि उन्हें ये लगता है कि आप शायद अपना वचन भूल गए हैं। अच्छा यही होगा कि आप क्षमा मांग लें और दोनों भाइयों की व्याकुलता को शांत करें।'

अंगद के साथ लक्ष्मण गुफा में प्रविष्ठ हुए। विशाल गुफाओं के प्रबंधन ने उन्हें स्तब्ध कर दिया। लक्ष्मण का गुफा में प्रवेश सुग्रीव को भयभीत कर गया। उन्हें बाली की वो सलाह याद आयी कि तारा आने वाले अनिष्ठ को भांप लेती है। सुग्रीव ने तारा से अनुरोध किया कि वह लक्ष्मण से बाहर ही मिलें और उनके आने के प्रयोजन को जानने की चेष्ठा करें। 'बहुधा व्यक्ति का क्रोध स्त्रियों को देखकर कुछ शांत हो जाता है! जब आप लक्ष्मण को शांत कर दें तब मैं उनसे मिलता हूँ!'

तारा ने लक्ष्मण को बताया कि समस्त वानरों को किष्किंधा में एकत्र होने के निर्देश दिए जा चुके हैं। परन्तु लक्ष्मण नहीं माने, उन्होंने गुफा के भीतरी भाग में प्रवेश किया और सुग्रीव को उनकी नैतिकता के बारे में चेताया। सुग्रीव ने भरोसा दिलाया 'यदि मैंने कुछ भी अनैतिक किया हो तो मैं उसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ। श्रीराम के प्रताप से ही मुझे अपना राज्य और कुटुंब वापस मिला। श्रीराम अपनी पत्नी सीता को अपने पराक्रम के बल पर वापस लाएंगे, मैं एक सहायक के रूप में उनके साथ रहूंगा!'

चापलूसी के दो मीठे बोल किसी भी पुरुष को शांत करने में बहुधा कारगर सिद्ध होते हैं। सुग्रीव ने कुशलता के साथ इसका उपयोग किया। लक्ष्मण का क्रोध पिघल भी गया। वे बोले 'ये शब्द मेरे भाई के अतिरिक्त किसी अन्य

व्यक्ति के लिए संभव नहीं हैं! आप राजा होने के योग्य हैं!' स्थिति नियंत्रण में आते ही सुग्रीव ने हनुमान को निर्देश दिया कि 'दस दिनों के भीतर समस्त वानर सेना को जंगलों और पर्वतों से आकर एकत्र हो।' सुग्रीव ने विश्व के सभी वानरों को एकत्र करके अपने संगठनात्मक कौशल का परिचय दिया। कंद मूल हाथ में ले वे बोले 'सभी वानर किष्किंधा में एकत्र हो रहे हैं!'

सुग्रीव एक सुदीप्त स्वर्ण रथ पर सवार होकर वानरों को साथ ले श्रीराम के निवास स्थल की ओर निकल पड़े। श्रीराम के सामने पहुंचकर रथ से उतरते ही श्रद्धापूर्वक उनके चरणों में नतमस्तक हो गए। राम उनके इस भाव से अत्यंत प्रसन्न हुए। सुग्रीव अपनी मित्रता को और प्रगाढ़ करना चाह रहे थे। आसन ग्रहण करने के बाद राम ने सुग्रीव को एक सफल शासक होने के बारे में सलाह दी। राम ये जानने को उत्सुक थे कि क्या सुग्रीव वास्तव में सीता की रक्षा हेतु लंका पर चढ़ाई की योजना बना सकते हैं!

'एक राजा को अपने विभिन्न कर्त्तव्यों के निर्वाह में समय को बांटने में सावधानी बरतनी चाहिए!' धार्मिक गुणों की रक्षा हेतु और आगे होने वाली असावधानियों को ध्यान में रखते हुए आगे बोले 'अनर्गल प्रलापों में लिप्त राजा वृक्ष से सोती हुई चिड़िया की भाँति गिरता है!' फिर प्रार्थना करते हुए बोले 'कृपया अपने सभी मंत्रियों और सेनापतियों से मंत्रणा कर एक योजना बनायें!'

राम को क्रोधित न पा, प्रसन्न सुग्रीव बोले 'मेरा समस्त यश वैभव आप ही की कृपा दृष्टि और ईश्वर इच्छा से वापस आया है!' राम को अपनी सच्चाई का विश्वास दिलाते हुए बोले 'धिक्कार है ऐसे व्यक्ति पर जो अपनी कृतज्ञता से उऋण न हो सके !' फिर असंख्य वानरों, लंगूरों और रीछों को इंगित कर बोले 'देखिये, ये सेना और इनके शक्तिशाली सेनापति, विश्वभर से, मेरे बुलाने पर यहां एकत्र हो चुके हैं। इन्हें अरण्यों की गूढ़ समझ है। ये कोटि की संख्या में आपके लिए युद्ध करेंगे। ये रावण का सर्वनाश कर सीता की रक्षा करेंगे!'

राम अत्यंत प्रसन्न हुए 'आपकी मित्रता इंद्र की वर्षा, सूर्य के प्रकाश और चंद्र- निशा की भांति सुखदायक है! आप सदैव अपने शब्दों और व्यवहार से सरल-सौम्य रहे हैं।' फिर कहा 'मैं आपकी सहायता से अपने सभी शत्रुओं को परास्त कर सकता हूँ! आप मेरे अभिन्न मित्र हैं और मेरी सहायता करने में सक्षम हैं। वो क्षण दूर नहीं जब मैं रावण को अपने तीरों से भेद कर सीता की रक्षा कर लूँगा!'

'ये क्या है ? इतना अन्धकार ? इन वानरों का झुण्ड सभी ओर है!' राम ने बड़ी संख्या में विश्वभर से आये वनों में निवास करने वाले, वृक्षों पर रहने वाले उन प्राणियों का

सभी पशु रावण की घुसपैठ रोकने को एकजुट थे। पशु मानव को मित्र समझते हैं। जो व्यक्ति उन्हें अपना आहार समझे उनके प्रति उनके मन में प्राकृतिक घृणा होती है। रावण उनका स्वीकृत शत्रु था। राम उनके मित्र थे।

झुण्ड देखा। वे सागर, पर्वत, नदी और जंगलों से आये थे। कुछ विशालकाय तो कुछ छोटे थे। कुछ चालाक तो कुछ सौम्य प्रतीत होते थे। उनमे भाईचारा और आपसी बंधन था । सुग्रीव का आह्वान चमत्कारिक प्रतीत हो रहा था।

सभी अपने गुटों में अपने सेनापति की अधीनता में विराजमान हो गए। कुछ वृक्षों से लटक रहे थे। तभी वहां विशाल रीछों का एक झुण्ड आया जो वानरों के साथ था। सुग्रीव ने गणना हेतु सभी सेनापतियों से अपने गुटों की क्षमता की जानकारी देने को कहा। उनकी गिनती सैकड़ों में नहीं बल्कि लाखों करोड़ों में थी। सभी पशु रावण की घुसपैठ रोकने को एकजुट थे। पशु मानव को मित्र समझते हैं। जो व्यक्ति उन्हें अपना आहार समझे उनके प्रति उनके मन में प्राकृतिक घृणा होती है। रावण उनका स्वीकृत शत्रु था। राम उनके मित्र थे।

राम ने देखा कि वानरों में एक भव्य न्यास था, आवश्यकता पड़ने पर उनमें आकार ले सकने की क्षमता थी। वो यात्रा में बड़ा आकार ले सकते थे और छोटे स्थलों में स्वयं को दबा कर, वृक्षों की टहनियों पर लटक सकते थे। उन वानरों में एक पल में अपनी मुष्ठि से वृक्षों को उखाड़ फेंक सकने और फिर फल खाने वाली सौम्य हथेली में परिवर्तित कर सकने की अकूत क्षमता थी। वे साधारण थे, उनमें आपसी सूझबूझ थी! सुग्रीव उनके राजा थे। राम सुग्रीव के अपने कुटुंब के प्रति इस लगाव के प्रशंसक बन गये! ■